



राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित

KGP के भूले-बिसरे Lingos

UBI

Unfortunately Born in India

पंजी Dude



11:00:00 Pm



पृष्ठ 3

चंदू की चमत्कारी FT

पृष्ठ 6

11 बजे की कहानी, VP की जुबानी

सितम्बर 2008

पृष्ठ 7

प्लेसकॉम से रूबरू

हिन्दी दिवस समारोह



प्रॉ प्रदीप कुमार श्रीवास्तव

IIT की मौजूदा तकनीक अभिविन्यस्त शिक्षा प्रणाली से जुड़े लोगों के बीच हिन्दी को जीवंत रखने में राजभाषा विभाग का अपूर्व योगदान रहा है। हिन्दी को प्रोत्साहित करने हेतु राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित “हिन्दी दिवस समारोह” जो 12 सितंबर से 14 सितंबर तक चला, सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

प्रॉ प्रदीप कुमार श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य में 12 सितंबर को 10:30 पूर्वाह्न में SN Bose प्रेक्षागृह में समारोह का उद्घाटन किया गया। वे केंद्रीय औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, MPC डिवीजन के सहायक निर्देशक हैं। इन्हें 'जूनियर चैंबर इंटरनेशनल, USA' द्वारा 'द आउटस्टैंडिंग यंग परसन्ऑफ द वर्ल्ड' अवार्ड से सम्मानित किया गया है। विज्ञान की नई शाखा "साई-न्यूनिक्स" को जन्म देने के कारण इन्हें "फादर ऑफ साई-न्यूनिक्स" भी कहा जाता है।

उद्घाटन समारोह में प्रो पी के श्रीवास्तव ने साई न्यूनिक्स विषय पर प्रकाश डाला और "डीफोरेस्टेशन ऐंड इट्स कन्सेक्वेंसेज" को अपने मजेदार कार्टूनों के जरिए दर्शाया। विज्ञान के साथ कार्टूनों के मनोरंजक मिश्रण ने दर्शकों को खूब लुभाया। 11:40 पूर्वाह्न को स्कूली बच्चों के लिए निबंध प्रतियोगिता एवं 12:30 अपराह्न को हिंदीतर और हिन्दीभाषी कर्मचारियों के लिए पृथक् निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 6:30 अपराह्न को कालिदास प्रेक्षागृह में अपने विशेष व्याख्यान के दौरान उन्होंने "नैनोटेक्नॉलाजी" के विषय पर कार्टूनों के माध्यम से चर्चा की। उन्होंने नैनोटेक्नॉलाजी को 'नैक्स्ट बिग थिंग' बताया और डॉ अब्दुल कलाम द्वारा नैनोटेक्नॉलाजी के विकास पर जोर डालने का भी जिक्र किया। राजभाषा के अध्यक्ष प्रॉ यू सी गुप्ता ने प्रॉ श्रीवास्तव को संस्थान का मोमेन्टो प्रदान किया एवं प्रॉ पी सी पाण्डेय ने शॉल भेंट कर उन्हें सम्मानित किया।

13 सितंबर को 9:30 पूर्वाह्न में स्पेक्ट्रा ग्रुप के निवेदन पर साईन्यूनिक्स विषय पर इंटरैक्टिव सेशन का आयोजन मैथमेटिक्स डिपार्टमेंट के सेमिनार कक्ष में किया गया। 11:30 पूर्वाह्न में संस्थान छात्रों एवं संस्थान कर्मचारियों की वाद-विवाद एवं वर्तनी प्रतियोगिता हुई।

14 सितंबर को 3:30 अपराह्न में अंतिम दिन की शुरुआत हुई राजभाषा के कार्यकारी अध्यक्ष प्रॉ यू सी गुप्ता

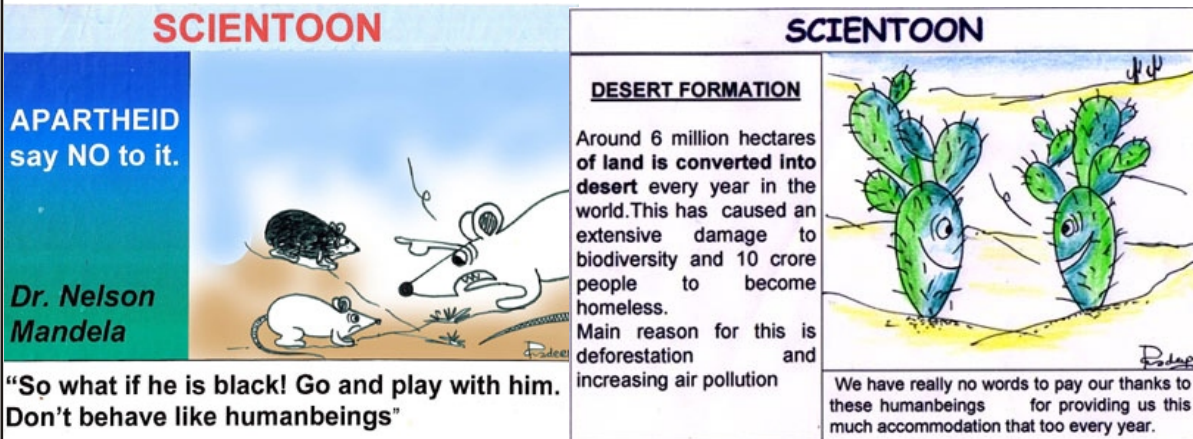
के स्वागत संबोधन के साथ तथा उन्होंने तीनों दिनों का विवरण दिया। इसके पहले केन्द्रीय विद्यालय की छात्रा कुमारी नेहा ने अतिथि डॉ डी गुणशेखरन व मुख्य अतिथि मधुसूदन साहा का पुष्प प्रदान कर सम्मान किया। इसके पश्चात् डॉ डी गुणशेखरन ने सभा को संबोधित किया तथा अंग्रेजी में बोलते हुए उन्होंने डॉ एम साहा को धन्यवाद दिया कि वे KGP आए। और उन्होंने आश्वासन दिलाया कि राजभाषा के विकास के लिए दिल्ली से पूँजी की कमी नहीं होगी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व उच्चकोटि के लेखक तथा राजभाषा विभाग के पूर्व अधिकारी डॉ एस साहा ने तकरीबन 40 मिनट तक “हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की आपसी एकता पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान में अवकाश के दिन कोई नहीं आता है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि हमारा देश भौगोलिक दृष्टि से विशाल है किंतु भावनात्मक दृष्टि से जुड़ा है। उन्होंने भाषा के महत्व को समझाया तथा उसके सकारात्मक व नकारात्मक पहलू बताया। इसके अलावा उन्होंने इस बात की निन्दा कि हम अपनी भाषा पर विश्वास नहीं है तथा हमें लगता है कि english को छोड़ने पर हमारा विकास थम जाएगा। इसी के साथ-साथ उन्होंने हिंदी की गरिमा के बारे में भी बताया तथा कहा कि 200 में से 127 देश में हिन्दी जानने वाले लोग पाए जाते हैं। इसके अलावा उन्होंने सुझाव दिया कि हिन्दी के महत्व को बढ़ाने के लिए हमें कमालपाशायी प्रयत्न करने होंगे। तथा अंत में उन्होंने कुछ पंक्तियाँ P.D. Srivastav की ओर से कहा

“सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं मेरा मकसद है कि यह सूरत बदलनी चाहिए मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में ही सही हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए”

इसके पश्चात कूल सचिव डॉ गुणशेखरन ने तीन दिनों में हुई विविध प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कार प्रदान किया। अपिता सिंह KV2-KGP को निबंध में प्रथम पुरस्कार मिला। इसके अलावा कई कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। तथा VGSOM के छात्र विरेन्द्र एवं विजेन्द्र को वाद विवाद के लिए पुरस्कार मिला।

अंत में प्रॉ सोमेश कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा डॉ गुणशेखरन ने डॉ एस साहा को शॉल प्रदान कर सम्मानित किया। इस तरह अल्पाहार के साथ तीन दिवसीय हिन्दी दिवस संपन्न हुआ। इस समारोह की काफी वाह-वाही हुई लेकिन निराशा जनक बात यह थी की इस समारोह में जनता कम तादाद में शामिल हुई।



प्रो पी के श्रीवास्तव के द्वारा बनाया गए कार्टून्स

बिहार में आई बाढ़ से प्रभावित लोगों को अगर आप कोई सहायता प्रदान करना चाहते हैं, तो आप यहाँ संपर्क कर सकते हैं :

web : sambhaviitkgp.blogspot.com, email : sambhav.org@gmail.com, Mb. no. : 9734426818

अधिक जानकारी के लिए पृष्ठ 5 देखें।

INTINNO :- छात्रों के द्वारा छात्रों के लिए



काफी पसंद भी किया गया है। शीघ्र ही इस तकनीक को हमारे कॉलेज के सभी कोर्सों में लागू कर दिया जाएगा। इस प्रकार जब भी छात्र किसी कोर्स के लिए रजिस्टर करेंगे, उस कोर्स की पाठ्य सामग्री

assignment सबमिशन intinno के जरिए होगा तथा course related किसी भी प्रकार की जानकारी सभी के लिए सदैव उपलब्ध रहेगी।

उनका अगला कदम विभिन्न कॉलेजों से संपर्क करके वहाँ भी यही तकनीक को शामिल करना है। इसका फायदा यह होगा कि सभी रजिस्टर्ड छात्र कॉलेज का ध्यान किए बिना विभिन्न फोरम्स के द्वारा आपस में चर्चा कर सकेंगे। इस से शिक्षा के वैशवीकरण में मदद मिलेगी एवं छात्र अन्य विश्वविद्यालयों में चलने वाले कोर्सों से भी परिचित रहेंगे।

Intinno पर आप ट्रेनिंग एण्ड प्लेसमेंट से संबंधित जानकारी भी पा सकते हैं। यह कार्य Intinno नारद के सौजन्य से होगा। Intinno नारद एक ऐसा मंच होगा जिसके माध्यम से छात्र सभी नोटिस को अपने मेल पे प्राप्त कर सकेंगे। इससे नोटिसबोर्ड पर निर्भरता कम होगी।

फिलहाल Intinno अपना GUI (ग्राफिकल यूजर इन्टरफेस) सुधारने के ऊपर ध्यान दे रहा है। वे इसे और यूजर फ्रेंडलि बनाना चाह रहे हैं। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए उन्हें जरूरत है ऐसे लोगों की जो web page designing, ruby on rails, system setup, security, java आदि में पारंगत हों।

हम आशा करते हैं कि जल्द ही Intinno का बेहतर रूप हमें देखने को मिलेगा जो कि छात्रों के लिए और भी लाभकारी होगा और कामना करते हैं कि deferred प्लेसमेंट लेने वाले अपने ये alumni अपने हर लक्ष्य में सफलता प्राप्त करें।

Intinno, IIT खड़गपुर के छात्रों का एक सराहनीय enterprenuership प्रयास है। यह एक वेबसाइट है जो कि दिसम्बर 2007 में आरम्भ की गई थी। Intinno, IIT खड़गपुर के 4 सुपर फाईनल ईयर स्टूडेंट्स : उदित सजनहार , अपित जैन , जॉयदीप

नाथ और मयंक जैन का मौलिक विचार है। उनका M.Tech प्रोजेक्ट एक education management system विकसित करना था। इस प्रोजेक्ट को करते हुए उन्होंने एक course management system की संरचना की कल्पना की। उन्होंने अपने M.Tech प्रोजेक्ट को एक start-up में परिवर्तित कर दिया। और इस प्रकार intinno आरम्भ हुआ। इस प्रोजेक्ट में विभिन्न डिपार्टमेंट्स के 20 छात्र प्रतिनिधि भी शामिल हैं।

यह साइट छात्रों एवं प्रोफेसरों को assignment जमा करने एवं पाठ्य सामग्री वितरण करने में FTP (फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल) तथा google groups के उपयोग में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है। यह वेबसाइट एक सेंटर प्रदान करती है जिसके जरिए सभी एक ही स्थान पर सारी पठन सम्बन्धी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही विभिन्न फोरम्स के जरिए छात्र एवं प्रोफेसर किसी भी विषय पर discussion भी कर सकते हैं।

Intinno वेब 2.0 मॉडल पर बना हुआ है। इस theme में सर्विस प्रोवाइडर साइट पर जो जानकारी डालता है Users उसे प्राप्त करने के साथ ही उसे परिवर्तित भी कर सकते हैं। वे अपने तरफ से नई सामग्री भी डाल सकते हैं। इस प्रकार सफल समूह सहयोग के जरिए सभी अपनी समस्याओं का हल अत्यंत सरलता से पा सकते हैं। इस मॉडल में समय के साथ ही अपने आप सुधार होता है। इस वेबसाइट का यह गुण ही इसे अन्य वेबसाइट से भिन्न करती है।

शुरुआती दौर पर इसका इस्तेमाल कुछ ही कोर्सों के लिए किया जा रहा है जिसे

भारत का पहला मेकैनिकल हब बनने की राह पर खड़गपुर

दुनिया भर में मेकैनिकल इंजीनियर्स का प्रतिनिधित्व करने वाली दो अव्वल सोसाइटीज़, अमेरिकन सोसाइटी ऑफ मेकैनिकल इंजीनियर्स तथा अमेरिकन सोसाइटी ऑफ हीटिंग, रेफ्रिजरेशन एंड एयर कंडीशनिंग इंजीनियर्स का खड़गपुर में थोड़े ही दिनों में पदार्पण होने वाला है। इनके इस फैसले को kgp के अभियांत्रिकी विभाग के लिए उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक माना जा रहा है।

ASME का मुख्य उद्देश्य मेकैनिकल तथा अलाइड इंजीनियर्स को एक साझा मंच दिलाना है। इसके स्टूडेंट चैप्टर का प्रारंभ सितम्बर के अंत या अक्टूबर की शुरुआत में खड़गपुर में होने वाला है। ASME एक विश्वस्तरीय संस्था है जिसमें 120000 विद्यार्थी सदस्य और 180000 कार्पोरेट सदस्य विभिन्न देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियों से हैं। यह मेकैनिकल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में होने वाले अनुसंधान एवं विकास से संबंधित सूचना के आदान प्रदान हेतु बहुआयामी मंच भी प्रदान करती है। यह संस्था भारत में पहले से आई आई टी रुड़की, मुम्बई तथा मद्रास में कार्यरत है।

इस संस्था की सदस्यता के अनेक फायदे हैं। यह संस्था तकनीकी कंपनियों में इंटरशिप लगाने में सहयोग प्रदान करती

है। विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम कराना भी इसका प्रमुख कार्य है। औद्योगिक सदस्यों की इतनी बड़ी संख्या होने के कारण यह संस्था प्रत्येक विद्यार्थी को मेन्टर दिलाने का कार्य भी बखूबी करती है। इस संस्था का सदस्य होने से training and placement में भी फायदे होते हैं। उल्लेखनीय है कि आई आई टी रुड़की के एक छात्र ने ASME की सहायता से P&G में 68 lacs p.a. का



क्षितिज में इस वर्ष ASME द्वारा विश्व स्तर पर आयोजित student design competition का भारतीय संस्करण होने वाला है। इस भारतीय संस्करण में किसी भी प्रकार का पंजीकरण शुल्क नहीं रहेगा। इसमें आधुनिक मेकैनिकल समस्याओं के उपर प्रश्न रखे जाएंगे। अभी पुरस्कार राशि का फैसला नहीं हुआ है पर आशा की जा सकती है कि यह काफी ज्यादा होगी।

इसी प्रकार ASHRAE भी Kryotech नामक एक event को अपने संरक्षण में करवाने के लिए तैयार हो गयी है। इसमें रेफरीजरेशन के सवाल रहेंगे।

ऑफ-कैम्पस प्लेसमेंट प्राप्त किया। ASME की सहायता से ऑफ-कैम्पस placement की संभावना 50% तक बढ़ जाती है।

यह संस्था अपना मेधावी छात्र सदस्यों को छात्रवृत्ति भी देती है। ASME के सदस्य होने से छात्र तीन हजार से चार हजार की छात्रवृत्ति प्राप्त कर सकते हैं। हमारे मेकैनिकल विभाग के HOD सर



एवं प्रोफेसर शौविक भट्टाचार्य और प्रोफेसर किंशुक भट्टाचार्य भी संस्था के सदस्य हैं। इस संस्था को डीन, UGS का भी सहयोग अनवरत प्राप्त है। प्रथम वर्ष के छात्रों को इसकी सदस्यता मुफ्त में प्रदान की जाती है एवम् अन्य छात्रों को 12 डॉलर प्रति वर्ष शुल्क देना होता है।

ASME की तरह ASHRAE भी एक विश्वस्तरीय संस्था है। इस संस्था का भी पदार्पण खड़गपुर में कुछ ही दिनों में होने वाला है। इस संस्था द्वारा विश्वस्तर पर आयोजित किए जाने वाले इवेंट

Kryotech का आयोजन भी इस बार क्षितिज के अंतर्गत कराया जाएगा। ASHRAE ने अपने विभाग के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इन दोनों ही संस्थाओं के I.I.T. खड़गपुर में आने से मेकैनिकल विभाग तथा संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास नयी ऊचाईयों पर पहुँचेगा एवं I.I.T खड़गपुर भारत का मेकैनिकल हब बनके उभरेगा यही हमारी आशा है।

आवाज़ टीम

मुख्य संपादक: कुमार अभिनव

संपादक: विकास कुमार, पंकज कुमार सोनी, सुरेंद्र केसरी, सुमित सिंघल, अभिनव प्रसाद

सह-संपादक: अनुभव प्रताप सिंह, वरुण प्रकाश

सीनियर रिपोर्टर: अविमुक्तेश भारद्वाज

रिपोर्टर: आशुतोष कुमार मिश्रा, आदित्य मणि झा, मनोज कुमार, सोनल श्रीवास्तव, अनुभा गर्ग, दामिनी गुप्ता, अंकिता मंगल, गौरव अग्रवाल, मयंक कुमार सिंह, श्वेता, अमोल दयानंद सावंत, अमन कुमार

जूनियर रिपोर्टर: मधुसूदन शर्मा, स्वाति दास, निष्ठा शर्मा, अभिनव आनंद, अभिषेक मीना, गीता कुमारी, निधि हरयानी, प्रतिक भास्कर, रजनीश पट्टिदर, अनुराग कटियार, अभिषेक विश्वास, राहुल डे

वेब: आकाश दीप, सिद्धार्थ दोशी

चंद की चमत्कारी



* एक सत्य-कथा पर आधारित

VISA मिले बिना ही इन्होंने अपने विदेश यात्रा की पूरी तैयारी कर रखी थी *

वो कहते हैं ना
पैंग्र के हाथ में अग्र!!!
आ ही गये आखिर
Documents और
लगा ही गई... सालीफा.



* चंद छिछोरे का दिमाग KGP-LAN से भी तेज चलता है।

VISA interview के बाद - 1 day to go...

MISSION IMPOSSIBLE 2
पैकिंग बस एक दिन



खैर जैसे-तैसे हुई आखिर पैकिंग और भागते-भागते चल पड़े महाशय 1840 की लास्ट लोकल पकड़ने

आदत से मजबूर यहाँ भी लेट ... 1:36 am

हड़ताल!!!
4 मिनट में स्क-
चालीस की लास्ट
लोकल दूटने ही वाली
है।



बेटा ! अब 10DEX मलिस
और खुद ही लावकर
सलिस

जब TIMING इतनी अच्छी हो 1:41 am

जनाव की तो ऐसा अद्भुत संयोग तो हो ही जाता है !!



रुक जा
ओ दिल
दीवानी!!

पर संयोग को असंयोग बनने में देर हो कहीं लगती है
.....जा चढ़े जनाव बाज वाली एक्सप्रेस पे

.... और चढ़ते ही 1:41 am

इस अमरीश पुरी को भी अभी
ही आना था ??




LOCAL
FINE
500/-

सुबह सवा चार पर टेक्सी मिलनी तो टेढ़ी खीर थी ही 4:16 am

600 रुपये
दीजिए


अरे भाड़ा बता!!!
टेक्सी नहीं खरिदनी
मुझे!!
2000 दूंगा!



शेरा 200 में ले जाऊंगा
पर दो चार मुल्ले और बिठाऊंगा
2 मिनट बैठो में आता हूँ
दो चार फॉस लाता हूँ!

Flight उड़ने में बस डेढ़ घंटा बचा था और 4:30 am

पुरीवत है कि खल होने का नाम ही नहीं ले रही थी

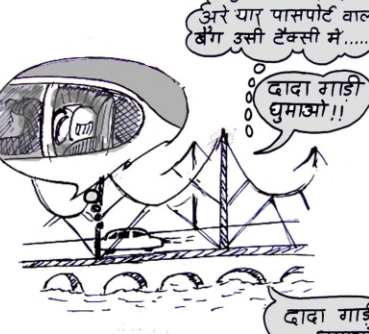


साला सवारी लेने गया है या
लड़की दूटने !!
चल दूसरी टेक्सी
देखता हूँ

दादा
कितना लगे??

आसमान में गिरे, खजूर पे अटकें 4:40 am


कुछ तो गड़बड़ है
अरे चार पासपोर्ट वाला
बैग उसी टेक्सी में.....



दादा गाड़ी
धुमाओ!!

लाख प्रयासों के बावजूद, निराशा हो हाथ लगी 4:45 am

अरे, कहाँ चली
गई टेक्सी !! सिर्फ
5 मिनट में रफूचक्कर



कहीं बैग लेकर
भाग तो नहीं गयी

वो कहते हैं न - अगर किसी को दिल से चाहो तो 4:58 am

जा मुसाफिर !! टेक्सी की उस कतार में आखिर से
दूसरी टेक्सी तेरी मंजिल है !!!



ये कहाँ से मसीहा बन के आया!!
अभी तक तो यहाँ नहीं था !!!!
उसके अस्तित्व पर अब भी आश्चर्यचकित था चंद छिछोरे

टेक्सी वाले ने थोड़ी नॉक-शॉक के बाद बैग वापस कर दी 5:08 am

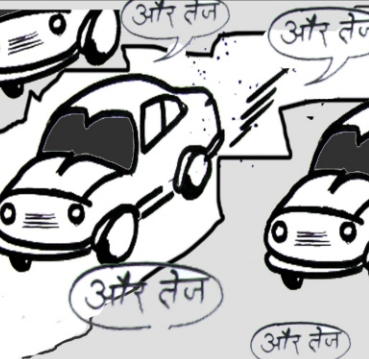
कोई है??



वो कोई मसीहा ही था आया,
मदद की, और शुक्रिया कहने का
मौका भी नहीं दिया !!!

आखिर काफी तलाश के बाद टेक्सी मिली और निकल 5:13 am

पड़ा वो समय की गति को परास्त करने ...



और तेज
और तेज
और तेज

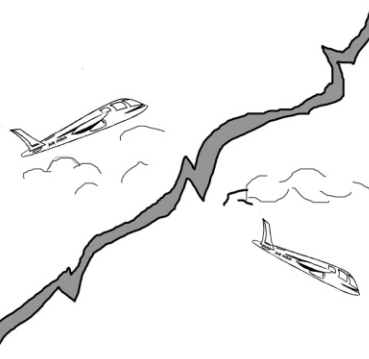
Airport पहुँचकर भाड़ा देते ही 5:50 am

दादा सँभाल के जाना
अल्लाह सलामत रखे !!
सामान को खयाल रखने



त रखे !!

और आखीर चंद छिछोरे आखिरकार चल पड़े विलायत .. 6:00 am



!!!! 6:00 am

अरे चार!!!
100 के धोखे में 1000-1000
के नोट घसा दिरो!



मिमी में सोचूँ, जिस देश में
फोकट में गाली भी नहीं मिलती
वहाँ मुझे इतना क्यों नवाजा
जा रहा है।

चुनाव टेक्नोलॉजी

किसी कमबख्त दार्शनिक ने कहा है कि दूसरे की जूती में पाँव डालना आसान नहीं होता। हम भारतीयों को ये बात पसंद नहीं आई और तब से उसे झुठलाने में लगे हैं। बल्की एकएक जूती में कई कई पाँव हैं। लिहाजा इंजिनियर रिपोर्टर हैं, रिपोर्टर एक्टर हैं, एक्टर नेता हैं, हर कोई क्रिकेट कमेंटेटर है और नेता....खैर छोड़िए नेताओं की क्या?

आइ आइ टी में एम टेक वालों को स्कॉलरशिप और ए टी एम कार्ड का इंतजार ऐसे ही रहता है जैसे शहीदों की विधवाओं को पेट्रॉल पंप का। तो मैं कह रहा था कि इस मामले में डाकिये नेताओं की तरह बर्ताव करते हैं, और नेता....खैर छोड़िए नेताओं की क्या? तो मैं अकाल के दिनों के राइस मिल की तरह पोस्ट ऑफिस में पड़े अपने ए टी एम कार्ड को चार दिनों में बामशाक्कत हासिल कर के अभिनव बिद्रा की तरह फील करता हुआ वापस लौटा तो एक श्रीमान् मेरी विंग में चुनाव प्रचार करते हुए पाए गए। मुझे पकड़ कर कहने लगे - "मेरी ही कोशिश से डाकिर अब डिलिवरी रूम में करने लगे हैं!!!"

(या अल्लाह!! मलेरिया के मरीज को कोई कहता है कि शहर के सारे मच्छर मैंने मारे हैं!! काफिर कहीं का!!!)

मैंने कुढ़ते हुए कहा "शुक्रिया!"

उनकी हिम्मत और बढ़ गई, कहने लगे "ये जो सड़क हॉल में बन रही है मेरी ही कोशिश का नतिजा है!!!"

(हॉल की सड़क वैसे ही बन रही है जैसे भारत विश्वशक्ति बन रहा है, 2020 तक

उम्मीद है।)

मैंने कहा "सड़क बनती दिखती तो नहीं?"

इसपर उनका अपने पेशे से प्यार जागा, बाले "इंजिनियर डिजाइन करता है, वो मैंने कर दिया है। बाकी लेबरों का छोटा सा काम है, कभी भी होता रहेगा। आपका वोट मुझे ही मिलना चाहिए।"

खैर उन महात्मा से किसी तरह मुक्ति मिली तो राहत हुई।

आइ आइ टी में निशाचरों की परंपरा है। लोग दिन में सोते और रात में जागते हैं। तो चुनाव प्रचार में भी परंपरा का पूर्ण निर्वाह हो रहा था। एक पैनल जब रात के एक बजे चुनाव प्रचार पर निकला तो कुछ नामुराद के3जी के शाहरुख की तरह परंपरा तोड़, सोते हुए पाए गए। इन कुंभकर्णों को जगाने के लिए दरवाजे नगाड़े बना दिए गए और बाद में साँरी की मुरली बजाई गई। वैसे हमारे देश की तरह आइ आइ टी में भी अंग्रेजी की बड़ी भयावह परंपरा है। एक ऐसे ही घोर परंपरावादी अपने निशाचरी प्रचार में घनघोर निद्रा से जागी जनता के निःशंक कहते हुए पाए गए - "आइ एम स्टैनडींग इन इलेक्शन।"

जनता की मुद्रा से लगा कि कहना चाहती हो "यू आर स्टैनडींग इन ऑवर लॉबी वाईल वी वेयर स्लीपींग।"

खैर चुनाव खत्म हो चुके हैं और मेरा रूममेट पूछ रहा था की रखी वाले पैम्फलेट्स किस भाव खरीदेंगे? वैसे एक मजेदार बात और हुई सबसे पहला वोट ऑफ थैंक्स हारे हुए उम्मिदवार का आया। अच्छा हुआ। उन्हें मोह माया से मुक्ति मिल गई। वोट लिए बिना ही थैंक्स कहने लगे। किसी ने सच ही कहा है 'हारे को हरिनाम'।

बात संपादक की

“कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों से रहा दुश्मन दौर-ए-जहाँ हमारा।”

ये शब्द वैसे तो इकबाल साहब ने हम हिन्दुस्तानियों के लिए कहा था, लेकिन हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिए भी ये उतने ही प्रभावी हैं। देश में कहीं इसके प्रयोग से लोग खुद को छोटा महसूस करने लगते हैं, तो कहीं तोड़ मड़ोड़ कर इसके साथ खिलवाड़ किया जाता है। भारत में जब भी कोई आक्रमण हुआ है, उसका प्रभाव हिन्दी पर जरूर पड़ा है। चाहे मुगलों का दौर हो या अंग्रेजों का शासन, हिन्दी की दशा हमेशा ही प्रभावित हुई है। पर हिन्दी भी अड़ी रही। इसने हार नहीं मानी। आज के इस ग्लोबलाइज़ेशन के युग में भी जब युवा वर्ग हिन्दी को तिरस्कार की नज़रों से देखता है तो भी हिन्दी बस मुस्कुरा के रह जाती है। यह हिन्दी की दृढ़ता ही है कि इसने हर मुश्किल का सामना ऐसे ही मुस्कुरा कर किया है और हर हमलावर को स्वयं मे समा कर अपना अभिन्न अंग बना लिया है।

हमारी राष्ट्र भाषा के साथ-साथ हमारे देश को भी हर युग में कई हमले झेलने पड़े हैं। कभी

विदेशी आतंकियों से तो कभी देश के ही कुछ “कर्ण धारों” की वजह से। आज भी आए दिन बम विस्फोटों से जनमानस में दहशत फैलाने की कोशिश की जा रही है। कभी जाति के नाम पर, तो कभी धर्म के नाम पर और कभी तो क्षेत्र के नाम पर देश को बाँटने का प्रयास हो रहा है। एक महाशय तो क्षेत्रियता के कारण (या यों कहे की वोट बैंक की चाह में) इतने अंधे हो गए हैं कि उन्होंने उस राज्य की भाषा छोड़ कर राष्ट्र भाषा में बोर्ड लगाने वाले दुकानों को उजाड़ देने का फ़रमान जारी कर दिया है। एक तरफ “मनुवादियों” को भला-बुरा कहा जाता है, तो दूसरी तरफ देश की प्रमुख पार्टियाँ “सेक्युलरिज़्म-स्युडोसेक्युलरिज़्म” के झगड़े में पड़ी हैं। इन सबके बावजूद भी देश की अखंडता यदि सही सलामत है तो निश्चय ही ‘कुछ बात’ तो है।

और कुछ बात हमारे संस्थान के छात्रों में भी है। हमलोग भी सबकुछ हँसते-हँसते सह जाते हैं। जो लैब पहले 20 छात्रों के लिए बनाया गया था चाहे उसमें 30 छात्रों को काम चलाना पड़े या फिर 1 छात्र के लिए किसी तरह रहने योग्य कमरे में 2 को निर्वाहन करना

पड़े, हमलोग गुज़ारा कर लेते हैं। लेकिन यहाँ सोचने वाली बात यह है कि इन तीनों उदाहरणों में जो हो रहा है क्या उसे वैसे ही चलने देना सही है? यदि हम सब अपने मन को टटोलें, तो जवाब यही आएगा कि तीनों स्थानों पर, भले ही अलग-अलग तरीके से, लेकिन कदम उठाना जरूरी है। और जरूरी है इस विषय में एक गहन चिंतन। तो आइये हम सब मिलकर अपने राष्ट्र, राष्ट्र भाषा तथा राष्ट्र के लोगों के लिए कुछ करने का प्रण लें। और इसकी शुरुआत अपने संस्थान से ही करें।

वैसे फ़िलहाल मिड-सेम पास आ गए हैं तो थोड़ा चिंतन उसके बारे में भी कर लें वरना ऐसा न हो कि आपके ग्रेड्स के ग्यारह बज जाए (यहाँ गलती से बारह की जगह ग्यारह नहीं आया है बल्कि पिछले कुछ दिनों में ग्यारह के अंक ने KGP की जनता पर ऐसा असर छोड़ा है कि मुहावरा भी बदल गया)। मिड सेम में अच्छे प्रदर्शन की कामनाओं के साथ अगले अंक तक के लिए, अलविदा...।

PR चेयर???

इस वर्ष जिमखाना में एक नये पद Public Relation Chair का सृजन किया गया। इस वर्ष इस पद पर श्री पुलिकित आनंद (06 EG 1017) को नामित किया गया है। इस विषय पर जिमखाना प्रेसिडेंट प्रॉफेसर मनीष भट्टाचार्य से बात करने पर उन्होंने बताया कि इस पद की स्थापना जिमखाना की कार्यकारी परिषद (Executive Council) द्वारा की गयी है तथा वर्तमान में यह एक अस्थायी पद है। उन्होंने यह भी बताया कि इस पद को सृजित करने का मुख्य उद्देश्य छात्रों को जिमखाना की गतिविधियों से जोड़ना है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में छात्र जिमखाना की गतिविधियों में कम ही भाग लेते हैं तथा कई बार तो उन्हें इन गतिविधियों की जानकारी भी नहीं होती है। इस कारण इस पद की स्थापना की गयी ताकि जिमखाना की गतिविधियों का सही तरीके से प्रचार हो सके।

श्री पुलिकित आनंद से उनके कार्यों के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा कि उनका मुख्य कार्य छात्रों तक जिमखाना से जुड़ी हर गतिविधि की जानकारी पहुँचाना है। इस दिशा में उठाये गये कदमों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा



कि वर्तमान में जिमखाना की साइट का शीघ्र-अतिशीघ्र निर्माण एवं उसे लॉन्च कराना उनका प्राथमिक उद्देश्य है। इसके अलावा एक Grievance Cell का निर्माण करने की योजना है। यह एक फोरम के प्रकार का होगा जहाँ छात्र प्रशासन से जुड़ी अपनी समस्याओं को बात सर्केंगे तथा ये समस्याएँ संबंधित व्यक्तियों तक पहुँचायी जाएँगी। उन्होंने कहा कि अभी इस पर विचार किया जा रहा है तथा इसकी रूपरेखा तैयार की जा रही है और यह छात्र और प्रशासन के बीच संवाद कायम करने में सहायक होगा।

इसके साथ ही इस बार श्री आशीष नवाल (05 AG 1002) को संस्थान सीनेट में Undergraduate Representative नामित किया गया है। जिमखाना संविधान के अनुसार स्टूडेंट फोरम संस्थान सीनेट हेतु प्रतिवर्ष एक Undergraduate Representative, एक Postgraduate Representative और एक Research Scholar Representative का चयन किया जाता है।

KGP के Alumunus बने RBI गवर्नर

'मैं धारक को -- रुपये अदा करने का वचन देता हूँ'। इन पंक्तियों पर जब डॉ सी रंगराजन, डॉ विमल जालान, डॉ वाई वी रेड्डी का हस्ताक्षर देखा करते थे तब हममें से शायद किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि जिस संस्थान में हम उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे होंगे उसी संस्थान के एक पूर्व छात्र भी ऐसा ही वचन दिया करेंगे। जी हाँ, IIT Kgp के द्वारा 2008 के Distinguished Alumnus Award प्राप्त करने वाले डॉ डी सुब्बाराव की नियुक्ति 5 सितम्बर 2008 को भारतीय रिज़र्व बैंक के 22वें राज्यपाल के रूप में हुई।

एक तरफ तो यह हमारे लिए गर्व का विषय है पर दूसरी तरफ यह मीडिया के पक्षपातपूर्ण रवैये को सूचित करता है। भारत के लगभग सभी प्रमुख सामाचार-पत्र और विश्व के e-media ने उनके I.I.T Kgp से स्नातक करने की चर्चा भी नहीं की, वो तो शुक है कि I.I.T Kgp के website के Home page पर आपने Alumnus की महान उपलब्धि का जिक्र कर दिया गया था, अनस्था इसकी विश्वस्त्रियता पर भी लोगों को शंका हो जाती। इसे मीडिया का पक्षपातपूर्ण रवैया कहा जाये या Kgp की अक्षमता। शायद इसी को देखते हुए Gymkhana ने एक नए पद -- Public



Relationship का निर्माण आनन-फ़ानन में कर दिया, जो मीडिया पर अपना प्रभाव डाल सके।



डॉ सुब्बाराव पहले प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार परिषद के सचिव (2005-07), विश्व बैंक के प्रमुख अर्थशास्त्री (1999-04) आंध्रप्रदेश के वित्त सचिव (1993-98) और वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग में संयुक्त सचिव (1988-93) पद पर रह चुके हैं।

11 अगस्त 1949 में जन्में डॉ सुब्बाराव, स्नातक (IIT Kgp, भौतिकी, 1969), स्नातकोत्तर (IIT Kanpur, भौतिकी 1973), M.S (ओहियो विश्व विद्यालय, अर्थशास्त्र), Humphrey Fellow (M.I.T, 1982-83) किए हैं। सन् 1972 में अखिल भारतीय सिविल सेवा परीक्षा में अव्वल आने वाले डॉ सुब्बाराव इसमें शामिल होने वाले प्रथम IITian भी हैं।

डॉ सुब्बाराव की इस उपलब्धि से जहाँ संस्थान उत्साहित है वहीं संस्थान के Integrated M.Sc. Economics के छात्रों (जिनका अभी तक प्लेसमेंट नहीं हुआ है) की आशाओं का भी प्रादुर्भाव हो चुका है। वे अपने संस्थान को अर्थ शास्त्र के क्षेत्र में "एम आई टी और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स" के समकक्ष लाने में इनसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मदद चाहते हैं। संस्थान को इन्हें यहाँ अतिथि प्रवक्ता के रूप में आमंत्रित करना चाहिए। संस्थान इनकी मदद से भारत जैसे विकासशील देश के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय अर्थशास्त्र के अध्ययन की ओर भारत सरकार का ध्यान आकर्षित कर विशेष सहायता अर्जित कराए जिससे संस्थान के प्राध्यापक-समूह और कोर्स-प्रारूप का स्तर विश्व के अग्रणी अर्थशास्त्र शिक्षण संस्थानों के समकक्ष आ सके और JEE में इस विषय का चुनाव दायनीय AIR न होकर रूचि हो सके।

उच्च शिक्षा को बढ़ावा या राजनीतिक दाँव-पेंच?

'क' नेहरू छात्रावास में रहने वाला चतुर्थ वर्षीय छात्र है। यह सेमेस्टर उसके कैरियर के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। पर वह आजकल पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पा रहा है। कारण, उसके कमरे के सामने होता हुआ निर्माण कार्य। दिन भर होने वाले धूल मिट्टी, खटपट और मशीनों के शोर।

'ख' पटेल छात्रावास में रहने वाला प्रथम वर्षीय वह छात्र है जिसने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि वह कभी एक छात्र के लिए भी लगभग पर्याप्त कमरे में एक और छात्र के साथ रहेगा। आने से पहले जिसने एक समय का भी भोजन नहीं छोड़ा था वह आज मेस की लंबी पंक्ति को देखकर कई बार भोजन मजबूरी में छोड़ देता है।

'क', 'ख' और न जाने ऐसे कितने ही और छात्र हैं जो Kgp में कुछ समय से आए हुए प्रतिकूल बदलावों से अत्याधिक दिक्कतों का सामना कर रहे हैं। आश्चर्य ही है कि एक ऐसे संस्थान के छात्र जो राष्ट्र की श्रेष्ठ मेधा का प्रतिनिधित्व करते हैं, उनके दुःख-दर्द को सुनने वाला कोई नहीं है। आखिर ऐसा क्या हुआ है कुछ इन सालों में कि IITs में स्थिति इतनी विस्फोटक बनती जा रही है। आई ये नज़र डालें हाल के कुछ वर्षों के घटनाक्रमों पर-

20 मई, 2006- IIT Kgp के आगामी सत्र से 1862 की तुलना में 2505 की संख्या में स्नातक तथा परास्नातक पाठ्यक्रम के लिए छात्रों को लेने का फैसला।

12 मार्च, 2007- IITs में सीटों की संख्या बढ़ाने के संदर्भ में केंद्रीय सरकार द्वारा 988 करोड़ की राशि IITs को प्रदान करने की सहमति।

16 अप्रैल, 2008- 27% के आरक्षण को अमल में लाने के लिए सभी IITs की कुल सीटों में 13% की बढ़ोतरी।

28 मार्च, 2008- 11वीं पंच वर्षीय योजना के अंतर्गत 8 IIT तथा 7 IIM के संस्थापन के सुझाव को सरकार द्वारा मंजूरी तथा तत्कालीन सत्र से ही 6 नए IITs की शुरुआत की घोषणा।

इन सबका विश्लेषण हमें सीधे यह संकेत देता है कि 'क' एवं 'ख' की तरह ही सभी छात्रों की दिक्कतों का कारण हाल के वर्षों में लिए गए राजनीति से प्रेरित मनमाने फैसले ही हैं। IIT-B के निदेशक प्रो अशोक मिश्रा ने 6 नए IITs का बोझ पुराने IITs पर डालने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार द्वारा इससे संबंधित अत्यंत आवश्यक निधि को अभी तक मंजूरी नहीं मिली है जिसके कारण पुराने IITs को अपनी सीमित निधि से ही इस बोझ का निर्वाह करना पड़ रहा है। अगर Kgp की बात की जाए तो फीस में बढ़ोतरी, छात्रों की बढ़ी संख्या को संभालने के लिए कई छात्रावासों में एक और स्तर का निर्माण प्रारंभ होना तथा संसाधनों की कमी से संस्थान पर बढ़ता हुआ दबाव ही मुख्य मुद्दे रहेंगे। आज IITs में 1:9 के आदर्श प्रोफेसर-छात्र अनुपात की तुलना में पहले से ही खराब 1:15 का अनुपात 1:18 हो गया है।


हालांकि अगर कुछ आंकड़ों पर नजर डाली जाए तो जिस गति से भारत प्रगति की राह पर अग्रसर है, उसे आने वाले समय में अच्छी-खासी संख्या में

कार्य-कुशल इंजीनियरों की आवश्यकता पड़ेगी। परंतु सरकार के ऐसे फैसलों से क्या सच में कार्य-कुशल इंजीनियरों की संख्या बढ़ेगी? IIT का पाठ्यक्रम, संसाधन तथा योग्य प्रोफेसर ही एक IIT के इंजीनियर को सबसे अलग पहचान प्रदान करते हैं। पर आज योग्य प्रोफेसरों की घटती संख्या, छात्रों की बढ़ती संख्या तथा संसाधनों की कमी के कारण IIT की गुणवत्ता पर भारी प्रश्नचिन्ह लग गया है। आंकड़े कहते हैं कि आज प्रत्येक छात्र पर में प्रति वर्ष व्यय होने वाली रकम में 25% की गिरावट आयी है तथा 200000000 की तुलना में सिर्फ 150000000 रु ही व्यय हो रहे हैं। उधर SCIC(Standing Committee for IIT Council) ने भी अनुसंधान में आती गिरावट को रोकने के लिए परास्नातक तथा डिप्लोमा के लिए अतिरिक्त राशि की मांग की है।

आज जब सभी IITs निधि के कमी में छात्रों को मूलभूत सुविधा तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परिणाम देने में असफल रह रहे हैं, उस समय सरकार का पुराने IITs पर अतिरिक्त बोझ डालने के बजाए इन्हें इनकी सुदृढ़ता के लिए अतिरिक्त निधि प्रदान करनी चाहिए। परंतु सरकार का रवैया देख कर निकट भविष्य में ऐसा कुछ भी होना मुश्किल ही लग रहा है। स्वयं प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार प्रो॰ सी एन आर रॉव ने मीडिया में सरकार के नए IITs इसी सत्र से शुरू करने के फैसले पर अत्यंत खेद व्यक्त किया।

कहा कि “एक साल में इतने IITs का आरंभ होना उच्च शिक्षा के लिए एक आपदा ही है। IITs का संस्थापन होना कोई खेल नहीं है। इसके लिए सुनिश्चित नियोजन की आवश्यकता होती है।”

अभी तो शुरुआत भर है। आगे न जाने IITs और उनमें पढ़ने वाले छात्रों को कितने राजनीतिकों के दाँव-पेंचों का सामना करना पड़ेगा। शायद 'क' तथा 'ख' की दिक्कतों का फिलहाल कोई हल ना निकले परंतु हमें यह विश्वास है कि सरकार को यह समय रहते समझ आ ही जाएगा कि उसके फैसले का प्रभाव न सिर्फ संस्थान पर अपितु उससे जुड़े हुए हर एक पहलु पर पड़ता है।



“एक साल में इतने IITs का आरंभ होना उच्च शिक्षा के लिए एक आपदा ही है। मुझे इस बात की कोई मनक नहीं थी कि हमारे देश में अचानक से इतने IITs खुल चुके हैं। IITs का संस्थापन होना कोई खेल नहीं है। इसके लिए सुनिश्चित नियोजन की आवश्यकता होती है। मैं सरकार के इस कदम से अत्यंत दुखी हूँ तथा मैंने इस विषय में प्रधानमंत्री तथा HRD मंत्री श्री अर्जुन सिंह से भी वार्ता की है। मैं इस परिवर्तन से एकदम संतुष्ट नहीं हूँ।”

-प्रो॰ सी एन आर रॉव, प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार

संभव : बाढ़ आपदा के लिए IIT खड़गपुर का प्रयास

विगत दिनों बिहार में आई बाढ़ से दस जिलों के 41 लाख लोग प्रभावित हुए हैं। 2 शताब्दी बाद आई इस प्रचंड बाढ़ ने लोगों के सामान्य जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। आलम यह है कि वहाँ के लोग अपने घरों को छोड़ कर राहत-शिविर में रहने को मजबूर हो गये हैं। इस परिस्थिति में जहाँ हमारा संपूर्ण देश मदद के लिए आगे आ रहे हैं वहीं हमारा भी दायित्व बनता है कि हम भी अपनी तरफ से यथासंभव मदद करें। इसके लिए हमारे इंस्टिट्यूट के कुछ छात्रों द्वारा स्थापित संस्था 'संभव' ने पहल शुरू की है।

उनके द्वारा शुरु की गई इस पहल को सफल बनाने के लिए यहाँ के अन्य छात्रों ने काफ़ी मेहनत की है और यह कोशिश की जा रही है कि इस संचित जमाराशि का सही प्रयोग हो सके जिसके लिए इस जमाराशि को 'बाढ़ सहायता समिति' को प्रदान किया जाएगा। जमाराशि के सही प्रयोग का जायज़ा लेने 'संभव' के कुछ लोग कुछ दिनों बाद बाढ़-प्रभावित क्षेत्रों का दौरा भी करने जाएंगे। सभी छात्रों ने अपनी तरफ से हर-संभव मदद की है, जिसके फलस्वरूप अभी तक 1.9 लाख तक की धनराशि संगठित हो चुकी है।



इच्छुक लोग इस संबंध में जानकारी प्राप्त करने या योगदान देने के लिए निम्नलिखित पते पर संपर्क कर सकते हैं -

Website : www.sambhaviitkgp.blogspot.com
Email : sambhav.org@gmail.com
Mobile no. : 9734426818

11 बजे की कहानी, VP की जुबानी

आवाज़ ने हमारे वर्तमान VP से छात्र संबंधी मुद्दों पर एक वृहद साक्षातकार लिया। प्रस्तुत है इस वार्तालाप के कुछ अंश –

आवाज़ टीम : छात्र 11pm बैन से नाखुश हैं। इस 11 बजे बैन की शुरुआत कैसे हुई ?
VP : देखिए 11pm बैन की शुरुआत पूछी जाए तो पार्क की घटना इसकी मुख्य जिम्मेदार थी। पर कैम्पस के अंदर घुमने पर जो बैन आया वो काफी नाट्यात्मक था। असल में अप्रैल के महीने में सारे wardens, HPs, VP, Deans की बैठक हुई थी जिस में SN की Warden ने लड़कियों की सुरक्षा के लिए 11 बजे के बाद बाहर निकलने न देने की बात कही थी। उस समय यह बैन सिर्फ लड़कियों पे लागू किया गया था। बाद में प्रशासन ने बैन को सारे छात्रों पे लगा दिया।इसका नोटीस् तो पिछले सेम ही निकल गया था। पर इस सेम इसको सख्ती से लागू कर दिया गया।
आवाज़ टीम : OPEN House की बात की जा रही थी पर अभी तक ऐसा कुछ हुआ नहीं है। ऐसा क्यों ?

VP : सितम्बर के प्रथम सप्ताह में हुई HPs और Deans की बैठक में मैंने और सारे HPs ने DOSA से छात्रों के साथ एक open house करवाने की मांग की थी। छात्रों के मन में प्रशासन और छात्र हितों से सम्बन्धित काफी अनुत्तरित सवाल हैं। हमने छात्रों से एक प्रश्नावली ले कर भी DOSA को दी है। बार बार कोशिश करने पर भी अभी तक यह सम्भव नहीं हो पाया है।DOSA ने अभी और समय की माँग की है।
आवाज़ टीम : अगर किसी छात्र को अकस्मात रूप से रात को कैम्पस के बाहर जाना पड़े तो क्या प्रावधान है?

VP : जब कभी भी ऐसे रूल्स लगते हैं छात्र समूह से इसके बारे में कभी भी सलाह नहीं ली जाती। फिलहाल तो सबको Warden से इजाजत लेने को कहा गया है। मैंने इस मुद्दे पर DOSA का ध्यान आकृष्ट भी किया है कि यह हर बार यह नहीं सम्भव हो सकता कि छात्र इजाजत ले ही पाएँ। पर फिलहाल तो प्रशासन का यही निर्देश है कि अतयंत विषम परिस्थिति में DOSA को फोन करके स्वयं उनसे आज्ञा लें।

आवाज़ टीम : UG Rep, PG Rep एवं PR के नामांकन को लेके सवाल उठ रहे हैं। GYMKHANA President से बातचीत में उन्होंने हमें बताया की इसके लिए नोटीस्

लगे थे। परंतु हमें कहीं देखने को नहीं मिले। आपकी क्या राय है?
VP : UG Rep और PR के लिए कोई नोटीस तो नहीं लगे थे। दोनों पदों को चुनना पूर्णतः मेरा फ़ैसला था। PR Chair के नोटीस् का सवाल ही पैदा नहीं होता क्योंकि यह सेनेट से पारीत पोस्ट नहीं है।जहाँ तक UG Rep की बात है, तो उनका चुनाव काफी emergency में हुआ था। उस समय 140 छात्रों पर DC लगने वाली थी और उनको बचाने के लिए UG Rep की आवश्यकता थी। तो मैंने सबसे उपयुक्त छात्र का चुनाव किया। हाँ, PG Rep के लिए नोटीस् जरूर लगे हैं।

आवाज़ टीम : आने वाले समय में आप क्या-क्या काम करने वाले हैं?
VP : फ़िलहाल तो हम जिमखाना की वेबसाइट का पुर्न उद्घाटन कर रहे हैं जिसकी सहायता से छात्र जिमखाना के सारे प्रयोजनों के बारे में जानकारी एवं सारे नोटिस आसानी से प्राप्त कर सकेंगे। इसके अलावा हम एक ग्रीवेंस सेल और restaurant vigilance committee का भी गठन करेंगे। ग्रीवेंस सेल छात्रों की सारी कम्प्लेन्स सुनेगा और restaurant vigilance committee सारे restaurant में खाने की गुणवत्ता का ख्याल रखेगी।

आवाज़ टीम : Alumni Cell की टीम के पुनरगठन की जरूरत क्यों पड़ी?
VP : Alumni Cell का हम संपूर्ण विस्तार करने वाले हैं। अभी तक इसका काम सिर्फ एक – दो अनुस्थान का आयोजन करना रहा है, परंतु अब हम इसे संपूर्ण रूप से कार्य रथ करना चाहते हैं। यह अब साल भर काम करेगा और alumni से सम्पर्क में आकर यह हमें उनसे जोड़ेगा। Alumni को यहाँ की सारी खबरें दिलाने एवं उनको दूर देश से भी खड़गपुर से जोड़े रखने के लिए एक बड़ी टीम की जरूरत पड़ती। इसलिए एक समिति का चयन किया गया।

आवाज़ टीम : आप आवाज़ के माध्यम से छात्रों को कोई संदेश देना चाहेंगे?
VP : छात्रों को अब खुद आगे आना होगा। अपने हितों और अधिकारों के लिए खुद लड़ना होगा। उन्हें हर गलत बात के लिए प्रशासन से खुद बात करनी चाहिए। मेस का बिल ज्यादा क्यों आयाऋ पानी क्यों नहीं आ रहाऋ हर सवाल का जवाब उन्हें खुद तलाशना होगा। मैं या कोई और सिर्फ उनकी मदद कर सकता है, पर पहले उन्हें मदद लेने के लिए तैयार तो होना चाहिए। छात्र जागें, अधिकारों के लिए जूझें, मैं सदैव उनकी मदद के लिए तत्पर हूँ।

भाट OVERLOADED...

ऐसा भी होता है – पार्ट 1

स्टेशन पर खड़े हम अपनी ट्रेन का इंतजार कर रहे थे। अब हम तो टेकनिकल आदमी हैं। कानों में ipod पहनकर इधर-उधर घूमते हुए हम अपनी ट्रेन का इंतजार कर रहे थे। दिल की उमर्गों और मन की खुशी हमारे body-language से साफ झलक रही थी। कोई देखकर ही बता सकता था कि ज़नाब अपनी बन्दी से मिलने पुणे जा रहे हैं।

आए तो थे internship करने बंगलुरु की एक कंपनी में, बट कॉलेज की बंकिंग की आदत से बाज़ ना आए और जब बंकिंग के पीछे इतना बड़ा मोटिवेशन हो तो फिर खुद पर काबू कैसा। लंच के बाद ऑफिस में मेंटर को बिना बताए चुपके से कट लिए स्टेशन के लिए। IITian हैं, पूरी प्लानिंग रखते हैं। प्लान फ़ूल-फ़ूफ़ था।

Thursday second half और Friday पूरा दिन बंक मारकार अब डायरेक्ट Monday को ऑफिस रिपोर्ट करने वाले थे। 4 बहाने सोच रखे थे। सोचा मेन्टर के समक्ष कोई भी बहाना प्रस्तुत कर देंगे। तो यह था फ्लेशबैक, अब वापस से सीन पे वापस आते हैं। ट्रेन लेट थी – एक घंटा। अपनी आदत से मजबूर भारतीय रेल को गालियाँ देने से हम खुद को रोक नहीं पाए। 1 घंटे 20 मिनट के इंतजार के बाद हमारी ट्रेन आई। स्लीपर की टिकट थी और 19 घंटे की यात्रा। अपनी बैग अपने सीट पर टिकाकर हम भी अपनी टिक गए सीट पर। बंदी से मिलने की खुशी अभी भी हमारे चहरे पर उसी तरह बरकरार थी। हम अपने हसीन ख्यालों में खोए थे कि एक महिला हमारे सामने आकर हमें अपनी सीट से हटने को कहने लगी। हमने महिला से कारण पूछा तो वो कहने लगी कि यह उसकी सीट है। महिला की बेवकूफी पर हँसने से खुद को रोकते हुए हमने अपनी e-ticket(हम तो टेकनिकल आदमी हैं) निकालते हुए उसे महिला के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। इस पर महिला भी अपने पास से एक टिकट मेरे को दिखाने लगी। दो ही बातें हो सकती थी। या तो महिला की टिकट किसी और बोगी की थी या फिर किसी और दिन की। टिकट देखा तो आश्चर्य का ठिकाना ना रहा। महिला की टिकट उसी सीट की थी। अब दो बातें हो सकती थीं। या तो मेरी टिकट किसी और बोगी की थी या किसी और दिन की। डरते-डरते हमने अपने बैग से अपनी टिकट निकाली और देखा कि मेरी टिकट भी उसी सीट की थी। इस बात की

चेतावनी : यह घटना पूरी तरह से काल्पनिक है। किसी शख्स, जीवित या मृत से इसका ताल्लुक महज़ आकस्मिक है। 'आवाज़' किसी भी तरह से किसी भी तरह के ताल्लुकात के लिए जिम्मेवार नहीं है।

जानकारी तो थी कि RAC में एक सीट में दो लोग यात्रा करते हैं पर यहाँ तो दोनों की टिकट confirmed थी। फिर लालू जी की उस घोषणा की याद आई जिसमें उन्होनें ट्रेन्स में साईड मिडिल बर्थ की बात कही थी। पर यहाँ तो कोई साईड मिडिल बर्थ तो हमें दिखी नहीं। अब सोचा क्या करूँ। अब मेरे पास तो थी e-tiket जो पास हो भी तो TT के सामने यह बात साबित नहीं कर सकता की मैंने टिकट cancel नहीं कराई है। विश्वास क्या दिलाता अब तो मुझे भी शक होने लगा कि कहीं किसी ने टिकट cancel तो नहीं करा दी। अब टिकट तो मैंने किसी ट्रेवल एजेंट से कराई नहीं थी जिसने गलती या जानबूझ कर मेरी टिकट cancel कर दी हो। लेकिन मेरे irtct का पासवर्ड भी मेरे अलावा किसी को कैसे पता चलेगा और पताा हो भी तो कोई मेरी टिकट cancel करा के क्यों

खुश होगा। दिल में अभी भी उम्मीद बची थी। आखिरी उम्मीद से हम reservation-chart देखने गए तो वहाँ महिला का नाम देख के सिट्डी-पिट्डी गुम हो गई। KGP लिंगों में कहें तो मेरी ** ली। ट्रेन से उतरने के अलावा कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। मन ही मन indian railways, irtct और लालू यादव को गाली देने लगे।

बंदी से मिलने की खुशी और उमंगें तो कब का दिल, चेहरे और body-language से गायब हो चुकी थी। ipod भी कब का पॉकेट में वापस आ चुका था। वापस आकर कंपनी में बाकी intern-दोस्तों को क्या शकल दिखाऊंगा, यह सोच कर भी हमारी हालत खराब हो रही थी। ट्रेन भी स्टेशन छोड़ चुकी थी। अब तो अगले स्टेशन पे उतरना ही पड़ेगा जो कि सौभाग्यवश बंगलुरु में ही था। अपने आप से वादा कर लिया था कि अब internet से कभी टिकट नहीं कराऊंगा। लौट के बुढ़ू घर के आए वाली हालत होने ही वाली थी कि हमें एक TT नज़र आया। आखिरी उम्मीद के साथ हम उनके पास पहुँचे तो उन्होनें टिकट देखकर बताया कि हमारी टिकट AC 3-A में upgrade हो गयी है। यह ऐसा समय था जिसमें खुशी, आश्चर्य और डर की भावनाएँ एक साथ आ रही थी।

अब क्या कहूँ- आपको तो सब पता चल ही गया है। अपने आपको टेकनिकल कहने में भी शर्म आती है।

11 बज गए क्या?

कुछ ऐसी ही चर्चा हो रही थी Kgp में पिछले कुछ समय तक। कारण साफ था

एकछात्र : अरे सुना है, 11Pm बाद कोई बाहर नहीं निकल सकता
दूसरा छात्र : ये कैसे हो सकता है यार। मेरी लाइफ तो 10 बजे बाद ही शुरू होती है।

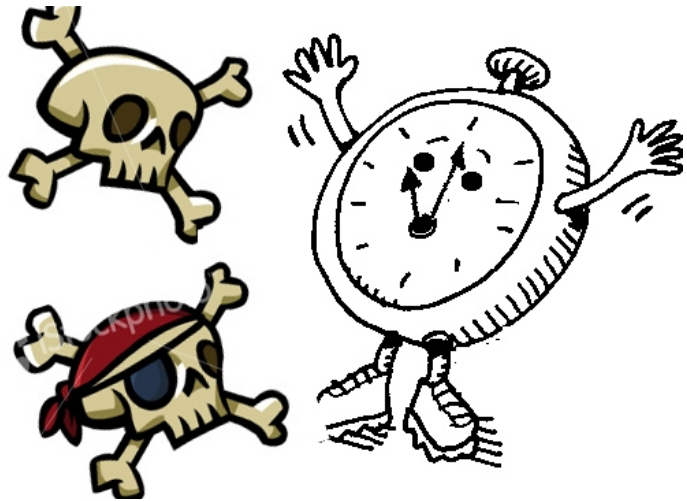
सुरक्षा-कारणों को ध्यान में रखते हुए प्रशासन ने यह निर्णय लिया था कि 11 pm बाद कोई भी छात्र अपने छात्रावास से और संस्थान से बाहर नहीं जा सकता है।

इसका असर – 11 pm बजते-बजते संस्थान की सड़के सूनी हो जाती थी। आवाज रह जाती थी तो बस कुत्तों के भौंकने की। यह कह सकते हैं कि Kgp की विख्यात night life का भविष्य अधर में लटक गया।

आप तो जानते ही होंगे कि बाकी सारे IITs में जितनी सोसाइटियाँ नहीं होंगी उससे अधिक तो मात्र Kgp में है। और इन सोसाइटियों में meetings रात्री के शुभ प्रहर में ही थी। अब तो इनकी meetings 6 Pm पर शुरू हाने लगी। छात्रों को लगने लगा 11 बजे बाद रूम में बैठ कर क्या करें। खाली दिमाग शैतान का घर कम्प्यूटर गेम्स खेलना शुरू किया, orkut, gtalk पर अधिक समय बिताने लगे। और रोज 11 बजे से सम्बन्धित नये नये संदेश लिखे मिलते।

जैसा कि आप जानते हैं Kgp के छात्रों ने कैम्पस में ही अपनी ऐसी life style विकसित कर ली है कि उन्हें कहीं बाहर जाने कि आवश्यकता नहीं रह जाती। Kgp की विख्यात night life भी उसका एक अभिन्न हिस्सा है लेकिन पिछले समय के लिए यहाँ की आज़ादी को किसी की नजर लग गई।

पिछले सेम में सभी छात्रावास वार्डन की DOSA के साथ meeting में यह निश्चित हुआ कि सुरक्षा कारणों को ध्यान में रखते हुए Hall से 11 pm बाद बाहर



प्लेस्मैट 2008-09

प्लेसकॉम से रूबरू

संस्थापन का सत्र समीप आ रहा है और सबकी निगाहें प्लेस्कॉम पर हैं कि वे इस बार क्या कुछ नया और बेहतर करेंगी। उनसे हमारी टीम ने नई गतिविधियों और क्रियाओं, तथा पुरानी समस्याओं पर चर्चा की। प्राप्त जानकारी के अनुसार, इस बार संस्थापन कई मायनों में पिछले कुछ वर्षों से भिन्न एवं बेहतर होगा।

उनके अनुसार हर सदस्य को 300 आदि कंपनियों से बातचीत करने का कार्य सौंपा गया है। कंपनियों का बँटवारा इनके बीच इस प्रकार हुआ है कि किसी एक सदस्य पर ज्यादा काम का बोझ न पड़े। इन कंपनियों का उनके अनुरूपी विभागों के संबंध के विषय में पूछे जाने पर उन्होंने इसका साफ-साफ खंडन किया। विभाग विशेष कंपनियों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम की सूची कंपनियों को भेजी जाती है और वे अपनी जरूरतों के अनुसार विभागों का चुनाव करते हैं।

हर सदस्य के पास बड़ी सी सूची है, अतः हर कंपनी का विवरण, उनसे हुई बातचीत का ब्यौरा तथा वर्तमान स्थिति का ज्ञान रखना असंभव है। उन कंपनियों के

नई खबरें

- इस बार के संस्थापन का पहला सत्र कदाचित 2 - 23 दिसम्बर तक बिना किसी इंतर IIT अंतराल के होंगे।
- यह निर्णय सारे IITs के लिए हैं, जो एक सर्व निदेशकों की बैठक में लिया गया है।
- यह निर्णय कदाचित सबकी भलाई के लिए लिया गया है। पहले सत्र के छोटे होने से कई कंपनियाँ इस सत्र में नहीं आ पाती थी, दूसरे सत्र में आई कंपनियों को कदाचित दूसरा दर्जा दिया जाता है छात्रों के अनुसार।
- इससे MTechs के संस्थापन में वृद्धि की आशा है।
- संस्थापन का दूसरा सत्र नये सेमेस्टर में ही होगा।
- BMC, LANXESS, आदि और कई नई कंपनियों की संस्थापन में आने की उम्मीद।

निकलने पर पाबन्दी लगा दी जायें और समय के साथ इस नियम की सफलता को देखते हुए प्रशासन ने यह निर्णय लिया कि सारे छात्रावासों में इस नियम का रूखी से पालन किया जाए।

इस नियम के लागू होने के कुछ ही समय में इसका असर दिखने लगा। 11 बजते-बजते Kgp की सारी सड़कों पर सन्नाटा छाने लगता और देखते ही देखते छात्रों की चहल कदमी एक अनजान घोर खामोशी में बदलने लगी। Kgp का अभिन्न हिस्सा है इसकी सोसाइटियाँ। याहाँ का हर छात्र किसी न किसी सोसाइटी का मेम्बर है। सर्व विदित है कि इन सोसाइटियों की meetings भी रात्री के शुभ प्रहर में ही होती है। इस नियम का आतंक यहाँ तक पहुँच गया था कि Kgp के एक प्रमुख fest के सदस्यों को जिमखाना से निकल जाने पर मजबूर कर दिया गया।

पुरी गेट पर 10 बजने के साथ ही आने-जाने वालों की सख्ती से तलाशी ली जाने लगी। और 11 बजते ही सारे दरवाजे बंद कर दिए जाते थे। जो भी नियम का उल्लंघन करने का प्रयत्न करता उसका i-card जब्त कर लिया जाता था और जानकारी मिली है कि करीब 114 छात्रों को सम्बंधित विभागों से कारण-बताओ नोटिस जारी किया जा चुका है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि Kgp की जीवन शैली में अकल्पनीय परीवर्तन होने लगे थे।

प्रशासन का तो कह नहीं सकते लेकिन बाकी सभी इस अजीब से नियम के खिलाफ थे, जिसके मुताबिक 11 बजे बाद अपने ही घर (कैम्पस) में विचरण पर पाबन्दी लगी हो। सभी जानते थे इस नियम का अन्त निश्चित है और वह समय शीघ्र ही आ गया जब छात्र-छात्राएँ इस बंधन से ऊब गये और इसके खिलाफ एकत्र होने लगे। Blogs पर blogs लिखे जाने लगे। विरोध के स्वर गूँजने लगे और इस जंग में प्रमुख भूमिका निभाने के लिए हम हमारे VP अर्नव के हार्दिक आभारी हैं। जिनके नेतृत्व में सभी छात्रावासों के प्रमुखों ने DOSA से बात की और इस बंधन से मुक्त करवाया। आज हम किसी आजाद पंछी की तरह कैम्पस में कहीं भी घूम सकते हैं।

बारे में अधिक ज्ञात तभी होता है हाब उनकी तरफ से सकारात्मक जवाब प्राप्त होता है। और बहुत बार यह होता है कि कंपनी में ही सूचना तथा निर्णयों की गति धीमी होने के कारण उत्तर मिलने में विलंब होता है।

इन कंपनियों के अधिकारियों का रहन-सहन पिछले वर्ष से आशुतोष मुखर्जी अतिथि गृह में कराया जा रहा है जहाँ के कमरे वातानुकूलित हैं। नयी अतिथि गृह का निर्माण तो संस्थापन तथा दूसरे कार्यों में सहायता प्रदान करने के लिए किया जा रहा था, पर निर्माण कार्य शेष समय के प्रतिकूल दिखाई पड़ रहा है।

कोलाघाट के समीप सड़क के खराब होने के कारण कंपनियों के अधिकारियों को खासा दिक्कतों का सामना करन पड़ रहा है। सड़कों की हालत एक गंभीर मुद्दा बनती दिख रही है। कई कंपनियों के PPTs इसी कारण विलंबित हो रहे हैं।

जहाँ तका प्रशिक्षण का सवाल है, प्लेसकॉम इससे बिल्कुल अनभिज्ञ है। उनके अनुसार यह कार्य Dean Of Student Affairs (DOSA) और श्री कर्माकर देखते हैं। इसका मूल कारण प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम का अंग होना है। जब हमने प्रशिक्षण के लिए संस्थापन के प्रतिरूप एक समिति की गठन सुझाव दिया, उन्होंने कहा कि इसमें कई परेशानियाँ आ सकती हैं जैसे कि दोनों समितियाँ उन्ही कंपनियों से संपर्क करने की कोशिश करने में जुट जाएँ एवं कंपनियाँ बस प्रशिक्षण हेतु इतन खर्च कर KGP नहीं आएँगी।

हर विभाग से संभवतः संस्थापन के लिए एक प्रतिनिधि नियुक्त किया जाएगा। तथापि संस्थापन सत्र के दौरान मदद हेतु 40 आदि सदस्यों की स्वयं सेवक टीम संगठित होती है जिसके सदस्य ऐसे छात्र होते हैं जिनकी संस्थापन हो चुकी है या जो पंच वर्षीय छात्र हैं। छात्रों की बड़ती संख्या को मददे नज़र रखते हुए प्लेसकॉम पूरी मेहनत से छात्रों की मदद करने में लीन है।

आमी बंगला जानि :

I.I.T खड़गपुर की उपलब्धियों में एक नाम और जुड़ गया है। यहाँ के छात्रों की मदद से एक साफ्टवेयर का निर्माण किया गया है जो बंगाली भाषा में पढ़ने-लिखने की सुविधा प्रदान करेगी। इसे आप से डाउनलोड कर सकते हैं।

R.P. Hall में वाशिंग मशीन के द्वारा लगी आग, 11o' clock rule पड़ा भारी :

R.P. Hall में वाशिंग मशीन के द्वारा लगी आग आश्चर्यचकित करने वाली घटनाओं में एक है। इस आग को बुझाने के लिए जब छात्रों ने मेस में locked fire extinguishers का सहारा लेना चाहा तो उसने धोखा दे दिया। अंत में कुछ बहादुर छात्रों के द्वारा water pistols की मदद से आग बुझाई गई। जब घायल छात्र को B.C.Roy ले जाया जा रहा था तो देखा कि fire brigade बाहर खड़ी थी क्योंकि 11o' clock rule के कारण main gate को खोलने की इजाजत नहीं थी।

'New Turn' फॉर मोर फंडा :

12 सितंबर को कालिदास ऑडिटोरियम में हिंदी दिवस के अवसर पर एक नयी पत्रिका 'New Turn' का शुभारंभ हुआ। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रदीप श्रीवास्तव आए थे जो अपने SCIENTOONS के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं। इसके माध्यम से नयी-नयी Technology, प्लेसमेंट सम्बंधित कंपनियों के बारे में तथा पेटेंट सम्बंधित जानकारी मुहैया कराई जाएगी।

ड्रामेटिक्स के मौसम का आरंभ

:

HTDS एवं ETDS ने इस बार अपने Freshers' Productions से लोगों का दिल लुभाया। इस अवसर पर HTDS द्वारा दो नाटक प्रस्तुत किए गए जिसमें फर्चों के टेम्पो एवं कला का प्रमाण मिला। ETDS ने 13 अपनी Freshers Production कालिदास ऑडिटोरियम में की। "IT=?" नामक इस हास्यास्पद नाटक को जनता ने खूब सराहा। यीशू मसीह की जन्म गाथा पर आधारित नाटक में फर्चों ने बेहतरीन अभिनय का प्रदर्शन किया। गौरतलब है कि एक नाटक को प्रस्तुत करने की कई नयी विधि देखने को मिली।

Communique, Robotix, E-Cell, Alumni cell सभी नए जोश के साथ :

हर साल की तरह इस वर्ष भी फर्चों के आते ही सभी Societies ने अपना काम जोर शोर से शुरू कर दिया है।

ROBOTIX

ROBOTIX अपने अनूठे Robots के साथ विद्यार्थियों-यों को रिझाने में काफी सफल रही है।



COMMUNIQUE अपनी छवि के अनुरूप बहुत ही ज्यादा उत्साह से वर्कशापस्करवा रही है। तीन वर्कशापस्जिनमें GD, GRE एवं PI के फंडे दिए गए। इन वर्कशापस् को हर वर्ष के छात्रों के अनुसार ढाला गया था। जनता ने काफी उत्साह से इनमें हिस्सा लिया।

E-CELL इस बार हर सप्ताह कोई न कोई कार्यक्रम के कराने में सफल रहा है। Python, Bplan workshops तथा Barcamp से जनता को काफी कुछ सीखने को मिला है। उनका ये संकल्प तारीफेकाबिल है।



काम की वृद्धि के कारण वर्तमान Alumni cell को रद्द करके नये एवं अधिक छात्रों का चयन किया गया जिससे अब Alumni cell चार दिन की अपेक्षा पूरा वर्ष काम करेगा। आशा है विभिन्न Societies का यह टेम्पो वर्षभर बना रहेगा।

IIT का विस्तार जारी रहेगा

पिछले वर्ष IITs में आरक्षित सीटों में रिक्त स्थानों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने SC/ST के छात्रों के लिए cut off में छूट की सीमा 40% से बढ़ाकर 50% कर दी है। संस्थान में छात्रों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए IIT kgp का अगले वर्ष तक 13% विस्तार की योजना भी बनाई गयी है। देश में एक साथ खुले 6 IITs एवं अन्य सात IITs में छात्रों की संख्या में हुई बढोतरी को देखते हुए अगले वर्ष तक तीन हजार प्रोफेसरर्स की नियुक्ति का फैसला लिया गया है। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कॉलेजों की भी सहायता ली जाएगी। यह फैसला 07 सितम्बर को IITs के निदेशकों की खड़गपुर में हुई बैठक में लिया गया।

KGP में अब डेंगू का आतंक

IIT खड़गपुर में डेंगू ने अपने कदम रख दिये हैं। संस्थान में डेंगू का पहला मामला MS हॉल में दर्ज किया गया है। इसको ध्यान में रखते हुए समस्त छात्रावासों एवं सामूहिक स्थानों पर DDT का छिड़काव किया जा रहा है। विद्यार्थियों को मच्छरदानी का प्रयोग करने एवं coil जलाने की सलाह दी गयी है।

विदेश जाना बना आसान :

AIESEC एक ऐसा विश्वस्तरीय युवा समुदाय है जो Internship के दौरान अजनबी छात्रों तथा और कंपनियों के बीच कड़ी का काम करता है तथा उन्हें अपनत्व प्रदान करता है। विश्व मर के 106 देशों के 1200 (16 भारत में) से ज्यादा विश्वविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ इसके माध्यम से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

TECHNOLOGY कार्टून कोना